RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452 Raaso
Refreed Journal

रासो

अन्तर्विषयी त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-17, अंक-2, मार्च अप्रैल मई 2024

RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452Raaso
Refreed Journal

रासो

इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन की त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-17 अंक - 2 मार्च-अप्रैल-मई-2024

सम्पादक
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

निदेशक
कॉम्पिटिशन प्लस संस्थान, ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स, अजमेर (राजस्थान)

संरक्षक

* **प्रो. जे. पी. शर्मा** - पूर्व कुलपति, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

सलाहकार मण्डल

* **प्रो. विभा उपाध्याय** - प्रोफेसर, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
* **नर्मदा प्रसाद उपाध्याय** - प्रसिद्ध साहित्यकार तथा संस्कृति चिंतक, इन्दौर (मध्य प्रदेश)
* **प्रो. टी.के. माथुर** - पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)
* **डॉ. रमेश अग्रवाल** - पूर्व स्थानीय सम्पादक, दैनिक भास्कर, अजमेर (राजस्थान)
* **डॉ. गौरव बिस्सा** - सहआचार्य, विभागाध्यक्ष, प्रबंधा अध्ययन विभाग, राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)
* **डॉ. बीना शर्मा** - पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सावित्री कन्या महाविद्यालय, अजमेर
* **प्रो. शोभा आर. मिश्रा** - आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, माधव महाविद्यालय, उज्जैन
* **डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी** - पूर्व सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली।

☆ उप सम्पादक
डॉ. रीता पारीक
प्राचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. मृत्युंजय शर्मा
सह-आचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ सहायक सम्पादक
डॉ. निष्काम शर्मा

☆ शब्द संयोजन
मुकेश कुमार माहेश्वरी

☆ सम्पादकीय/सचिव
व्यवस्थापकीय कार्यालय
सृजन संस्थान,
आचमन, वेद विहार,
लोहाखान, अजमेर-06
दूरभाष : 0145-2426610
e-mail : rasoajmjournal@gmail.com

☆ प्रकाशक :
पुष्पा शर्मा
सृजन संस्थान,
द्वारा आचमन पब्लिकेशन्स,
अजमेर

☆ मुद्रक :
मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स,
केसरगंज, अजमेर

☆ कम्प्यूटराइज्ड सेटिंग :
श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स
132, पंचवटी कॉलोनी,
अजमेर दूरभाष : 0145-2442701

सहयोग दर

* वार्षिक सदस्यता - 500 रु. (चार अंक) संस्थाओं हेतु - 600 रु. (चार अंक)
कृपया चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर श्रीमती पुष्पा शर्मा, प्रकाशक, आचमन पब्लिकेशन्स, अजमेर- 305006 के नाम भेजें।

प्रकाशक-श्रीमती पुष्पा शर्मा, 51/1509, वेद विहार, लोहाखान, अजमेर द्वारा मैसर्स सृजन संस्थान, अजमेर की ओर से प्रकाशित एवं मुद्रक-श्रीमती उषा गर्ग द्वारा मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स, केसरगंज, अजमेर से मुद्रित।

शैक्षिक शोध की पद्धतियाँ

भावना जैन
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

शोध प्रक्रिया में शोध-विधियाँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं, क्योंकि शोध की शुरुआत से लेकर निष्कर्ष तक हर चरण इन्हीं पर आधारित होता है। शोध-विधियाँ यह निर्धारित करती हैं कि शोध समस्या को किस प्रकार परिभाषित किया जाए, समस्या से जुड़े मुख्य शब्दों की परिभाषाएँ कैसे स्थापित हों, अध्ययन के लिए किन व्यक्तियों अथवा विषय-वस्तुओं का चयन किया जाए, आँकड़े किस प्रकार के औजारों से एकत्र किए जाएँ, उन आँकड़ों का विश्लेषण और व्याख्या किस ढंग से की जाए तथा अंततः प्राप्त निष्कर्षों को किस सीमा तक सामान्यीकृत किया जा सके। इसी कारण शोध-विधियाँ शोध को वैज्ञानिक दिशा और अनुशासन प्रदान करती हैं।

गुड, बर्र और स्केट्स ने शोध-विधियों का वर्गीकरण अनेक आधारों पर किया है। शोध का क्षेत्र—जैसे शिक्षा, मनोविज्ञान, इतिहास, दर्शन या जीव विज्ञान; शोध का उद्देश्य—जैसे वर्णन, कारण-ज्ञान, पूर्वानुमान या किसी विशेष पदस्थिति को समझना; शोध का स्थान—जैसे प्रयोगशाला या कार्य क्षेत्र; शोध का अनुप्रयोग—जैसे शुद्ध शोध या अनुप्रयुक्त शोध; आँकड़ों के एकत्रण की तकनीक—जैसे परीक्षण, स्केल, प्रश्नावली या अनुमतांक; संग्रहीत आँकड़ों की प्रकृति—जैसे वस्तुनिष्ठ, व्यक्तिनिष्ठ, मात्रात्मक या गुणात्मक; प्रतीकों का चयन—जैसे गणितीय या भाषायी; सोच का स्वरूप—जैसे आगमनात्मक या निगमनात्मक; तथा अनुसंधान के दौरान नियंत्रण की स्थिति—जैसे नियंत्रित या अनियंत्रित प्रयोग। इन आधारों से शोध-विधियों की अत्यन्त विस्तृत और विविध सूची बनती है, जिनमें कई विधियाँ एक-दूसरे से अतिव्यापी होती हैं।

यद्यपि वर्गीकरण व्यापक है, अधिकांश विद्वान शोध-विधियों को तीन मूल श्रेणियों में बाँटते हैं—ऐतिहासिक विधि, वर्णनात्मक विधि और प्रयोगात्मक विधि।

ऐतिहासिक शोध-विधि :- ऐतिहासिक शोध-विधि का प्रयोग तब किया जाता है जब शोध का उद्देश्य अतीत में विद्यमान परिस्थितियों, घटनाओं या व्यक्तियों के कार्यों को समझना और पुनर्निर्मित करना हो। इस विधि में शोधकर्त्ता अभिलेखों, दस्तावेजों, सरकारी रिपोर्टों, पत्रों, डायरियों, शिलालेखों तथा अन्य ऐतिहासिक स्रोतों का विश्लेषण करता है। इन स्रोतों की विश्वसनीयता और प्रमाणिकता की जाँच की जाती है और उनके माध्यम से अतीत की घटनाओं को क्रमबद्ध कर उनकी व्याख्या प्रस्तुत की जाती है। इसका उद्देश्य केवल अतीत का वर्णन करना नहीं, बल्कि उस समय की परिस्थितियों, कारण-भाव संबंधों और उनके परिणामों को समझना है।

वर्णनात्मक शोध-विधि :- वर्णनात्मक शोध-विधि वर्तमान की वास्तविक स्थिति को समझने

शोध-पत्र में उल्लिखित सन्दर्भ एवं विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है, सम्पादक नहीं।

की विधि है। इसमें शोधकर्तृता किसी भी चर में हस्तक्षेप नहीं करता, बल्कि जो स्थितियाँ, व्यवहार, प्रवृत्तियाँ या समस्याएँ वर्तमान में जैसी हैं, उनके तथ्यात्मक विवरण और विश्लेषण का प्रयत्न करता है। इसमें सर्वेक्षण, केस स्टडी, तुलनात्मक अध्ययन तथा विकासात्मक अध्ययन जैसी तकनीकों का प्रयोग प्रमुखता से किया जाता है। शिक्षा शोध में यह विधि विद्यालयों, छात्रों, शिक्षकों, पाठ्यक्रम तथा शैक्षिक प्रक्रियाओं की वर्तमान स्थिति को समझने में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होती है।

प्रयोगात्मक शोध-विधि :- प्रयोगात्मक शोध-विधि कारण और प्रभाव का संबंध ज्ञात करने की वैज्ञानिक विधि है। इसमें शोधकर्त्ता स्वतंत्र चर को बदलता है और अन्य सभी स्थितियों को नियंत्रित रखता है, ताकि यह देखा जा सके कि इन परिवर्तनों का प्रभाव आश्रित चर पर किस प्रकार पड़ता है। यह विधि उन स्थितियों में प्रयुक्त होती है जहाँ शोध का उद्देश्य किसी नई पद्धति, तकनीक, शिक्षा-सामग्री या प्रशिक्षण प्रक्रिया की प्रभावशीलता का निर्धारण करना होता है। इस विधि की विशेषता यह है कि इसमें नियंत्रण और परिवर्तन की सहायता से निश्चित वैज्ञानिक निष्कर्ष प्राप्त किए जाते हैं।

किसी भी शोध के लिए उपयुक्त विधि का चयन शोध समस्या की प्रकृति और आवश्यक आँकड़ों पर निर्भर करता है। यदि समस्या अतीत से जुड़ी है तो ऐतिहासिक विधि उपयुक्त होगी; यदि अध्ययन वर्तमान परिस्थितियों पर आधारित है तो वर्णनात्मक विधि उपयुक्त होगी; और यदि उद्देश्य कारण-प्रभाव संबंध स्थापित करना है तो प्रयोगात्मक विधि सर्वोत्तम मानी जाती है। कई बार शोध समस्या बहुआयामी होती है, तब शोधकर्त्ता दो या अधिक विधियों का संयुक्त प्रयोग भी कर सकता है। उदाहरण के लिए, किसी समस्या का इतिहास अभिलेखों से जाना जा सकता है और उसकी वर्तमान स्थिति सर्वेक्षण के माध्यम से समझी जा सकती है।

शोधकर्त्ता के लिए यह आवश्यक है कि वह सभी शोध-विधियों का सम्यक ज्ञान रखे, उनकी शक्ति और सीमाओं को जाने तथा उनकी उपयुक्तता को समझे। हिलवे का मत है कि यदि शोधकर्त्ता अपनी विधि का स्पष्ट और व्यवस्थित विवरण नहीं दे सकता, तो उसकी विधि अस्पष्ट और अविश्वसनीय मानी जाएगी और उससे गुणवत्तापूर्ण निष्कर्षों की संभावना कम हो जाएगी। अतः उचित, पूर्व नियोजित और सुवर्णित विधि शोध को वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान करती है और समस्या के समाधान के लिए एक संगठित तथा तर्कसंगत मार्ग प्रशस्त करती है।

शोध की ऐतिहासिक विधि :

ऐतिहासिक शोध वह विधि है जिसमें अतीत की घटनाओं, परिस्थितियों और विचारों का वैज्ञानिक पुनर्निर्माण किया जाता है। इतिहास केवल घटनाओं की क्रमबद्ध सूची नहीं होता, बल्कि उन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक शक्तियों का अर्थपूर्ण विश्लेषण होता है, जिनके संयुक्त प्रभाव से कोई घटना जन्म लेती है।

शिक्षा का भी अपना एक इतिहास है, जो समय-समय पर विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक शक्तियों से प्रभावित होकर विकसित हुआ है। जब शोधकर्त्ता शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करता है, तो वह पूर्व में प्रयुक्त पद्धतियों, सिद्धांतों और व्यवस्थाओं की विशेषताओं और उनकी सीमाओं को समझ सकता है।

अतीत के अनुभवों को समझ लेने से एक अध्यापक वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को अधिक स्पष्ट रूप से देख पाता है और यह जान सकता है कि किन शिक्षण-पद्धतियों में क्या कमियाँ थीं तथा उनसे क्या सीख ली जा सकती है। इस प्रकार ऐतिहासिक शोध शिक्षा के विकास और उसकी कमियों-सुधारों को समझने का महत्त्वपूर्ण साधन है।

ऐतिहासिक शोध की प्रकृति :

ऐतिहासिक शोध का मुख्य उद्देश्य अतीत की घटनाओं से संबंधित सत्य को स्थापित करना और उनसे वर्तमान तथा भविष्य के लिए सार्थक निष्कर्ष निकालना है। यह केवल प्राचीन घटनाओं का विवरण भर नहीं देता, बल्कि उनका वर्तमान परिस्थितियों से संबंध खोजकर यह अनुमान लगाने में सहायता करता है कि भविष्य में परिस्थितियाँ किस दिशा में विकसित हो सकती हैं। इस प्रकार ऐतिहासिक शोध अतीत का सही लेखा प्रस्तुत कर वर्तमान को समझने और भविष्य के प्रति आंशिक प्रागुक्ति करने की क्षमता प्रदान करता है।

अन्य शोध विधियों की तरह इसमें भी समस्या का निर्धारण, परिकल्पना का निर्माण, आँकड़ों का संग्रहण, उनका विश्लेषण, तथा तर्क पर आधारित निष्कर्ष निकालना शामिल है। किंतु इतिहासकार को कई विशिष्ट कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उसके पास उपलब्ध आँकड़ों पर नियंत्रण नहीं होता, न ही वह प्रतिचयन या पुनरावृत्ति कर सकता है, क्योंकि ऐतिहासिक आँकड़े समय से बँधे और स्थिर होते हैं तथा केवल उतने ही मिलते हैं जितने अतीत से उपलब्ध हों।

ऐतिहासिक शोध प्रयोगों पर आधारित न होकर प्राचीन प्रलेखों, अवशेषों, अभिलेखों आदि के प्रेक्षण-प्रतिवेदनों पर निर्भर होता है, जिन्हें दोहराया नहीं जा सकता। इन स्रोतों में कई बार अपूर्णता या अविश्वसनीयता रहती है, जिसके कारण व्याख्या की वस्तुनिष्ठता प्रभावित होने की संभावना होती है। साथ ही, कैलेंडर प्रणालियों व अभिलेखों की अपूर्णता के कारण घटनाओं की सही तिथि का निर्धारण भी कठिन हो जाता है। इस प्रकार ऐतिहासिक शोध एक जटिल, पर वैज्ञानिक विधि है, जो सीमित और अपूर्ण स्रोतों के आधार पर अतीत को समझने तथा वर्तमान के लिए सार्थक निष्कर्ष प्राप्त करने का प्रयास करती है।

ऐतिहासिक शोध का शिक्षा में महत्त्व :

शिक्षा-विज्ञान में ऐतिहासिक शोध अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि वर्तमान शिक्षा-व्यवस्था को समझने और भविष्य की दिशाओं का अनुमान लगाने के लिए भूतकाल की शैक्षिक उपलब्धियों, प्रयुक्त पद्धतियों और उभरती प्रवृत्तियों का ज्ञान अनिवार्य होता है। ऐतिहासिक अध्ययन शिक्षक, शिक्षाविद् और प्रशासक सभी को यह समझने में सक्षम बनाता है कि शिक्षा ने विभिन्न कालों में किस प्रकार परिवर्तन स्वीकार किए और उन परिवर्तनों के पीछे कौन-सी सामाजिक या सांस्कृतिक शक्तियाँ सक्रिय थीं।

गुड, बर्र और स्केट्स के अनुसार, शिक्षा में ऐतिहासिक शोध का पहला महत्त्व यह है कि स्कूल और अन्य शैक्षणिक संस्थाओं के विकासक्रम का ज्ञान अध्यापक एवं प्रशासक के व्यावसायिक प्रशिक्षण का मूलभूत अंग है। इससे वे शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्यों और संगठनात्मक संरचनाओं को अधिक स्पष्टता से समझ पाते हैं।

शिक्षा का अधिकांश कार्य परंपरागत ढाँचे में बँधा हुआ होता है, जिससे शिक्षक और प्रशासक

प्राय: स्थापित विधियों के पक्ष में पूर्वाग्रह विकसित कर लेते हैं। शिक्षा का इतिहास इस पूर्वाग्रह को दूर कर वैचारिक विस्तार प्रदान करता है और व्यक्ति को नए विचार अपनाने के लिए तैयार करता है।

ऐतिहासिक शोध शिक्षा क्षेत्र में उभरती नई प्रवृत्तियों को पहचानने में भी सहायक होता है। यह समझने में कि कौन–से विचार पहले भी आए, कैसे विकसित हुए और किस कारण प्रभावी या अप्रभावी बने—ऐतिहासिक दृष्टि विशेष मार्गदर्शन देती है।

वर्तमान में शिक्षा से संबंधित अनेक समस्याओं को उनके ऐतिहासिक विकासक्रम के प्रकाश में अधिक सहानुभूतिपूर्ण और वस्तुनिष्ठ ढंग से समझा जा सकता है। इससे समस्याओं का विश्लेषण निष्पक्ष बनता है और समाधान भी अधिक यथार्थपरक दिखाई देते हैं।

इतिहास यह भी दिखाता है कि किस प्रकार शिक्षा–व्यवस्था सरल, स्थानीय नियंत्रण से धीरे–धीरे जटिल और केंद्रीकृत संरचना की ओर गई। यह परिवर्तन आज की शिक्षा संरचना को समझने में महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

शिक्षा का इतिहास वैज्ञानिक अध्ययन का पूरक है। यह हमें अन्य कालों के शिक्षा–आदर्शों और मानकों से परिचित कराता है और समाजसेवियों को यह समझने में सहायता देता है कि पूर्व की कौन–सी त्रुटियाँ दोहराई न जाएँ।

अंतत:, ऐतिहासिक शोध शिक्षकों और महान शिक्षाविदों के प्रति आदर और प्रेरणाबोध उत्पन्न करता है। यह परंपरा और अनुभव से सीखने की भावना को सुदृढ़ करता है तथा शिक्षा–क्षेत्र की बौद्धिक परंपरा को सम्मान प्रदान करता है।

ऐतिहासिक शोध के प्रकार :

शिक्षा के इतिहास का अध्ययन केवल घटनाओं के क्रम को जान लेने का कार्य नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा गहन शोध–क्षेत्र है जिसमें शिक्षा से जुड़े विचारों, संस्थाओं, व्यक्तित्वों और विधिक व्यवस्थाओं का विद्वत्तापूर्ण विश्लेषण किया जाता है। शिक्षा क्षेत्र में ऐतिहासिक शोध मुख्यत: चार प्रकारों में देखा जाता है—ग्रंथ सूची संबंधी शोध, विधिक शोध, विचारों के इतिहास का शोध तथा संस्थाओं और संगठनों के इतिहास का शोध। प्रत्येक प्रकार शिक्षा के विकासक्रम को समझने में विशिष्ट योगदान देता है।

ग्रंथ सूची संबंधी शोध :– ग्रंथ सूची संबंधी शोध में प्रमुख शिक्षाविदों के जीवन, विचार, उपलब्धियों और उनके युगीन प्रभावों का विस्तृत अध्ययन किया जाता है। इसका उद्देश्य केवल किसी व्यक्तित्व की जीवनी लिखना नहीं होता, बल्कि यह देखना होता है कि उसका योगदान शिक्षा व्यवस्था, पद्धतियों या सामाजिक जीवन पर किस रूप में प्रभाव डालता है। भारतीय संदर्भ में महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, दयानन्द सरस्वती, सत्येन बोस आदि शिक्षाविदों के विचार इस प्रकार के शोध के महत्वपूर्ण विषय माने जाते हैं।

विधिक शोध :– विधिक शोध शिक्षा प्रशासन से जुड़े विभिन्न विधिक प्रावधानों और कानूनों के विकास का अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें यह देखा जाता है कि विभिन्न धर्मों व समुदायों द्वारा संचालित शिक्षा संस्थाओं का कानूनी आधार क्या रहा, केंद्र और राज्य सरकारों के बीच शिक्षा संबंधी अधिकारों का विभाजन किस रूप में हुआ, शिक्षकों और विद्यार्थियों की विधिक स्थिति कैसे परिवर्तित हुई, तथा निजी और

अनुदानित स्कूलों के प्रबंधन में क्या-क्या नियम विकसित हुए। यह शोध शिक्षा के कानूनी ढाँचे को समझने और नीतिगत सुधारों का मजबूत आधार प्राप्त करने में सहायक होता है।

विचारों के इतिहास का शोध :- विचारों के इतिहास का शोध शिक्षा-विचारों, दार्शनिक सिद्धांतों और शिक्षण पद्धतियों की उत्पत्ति और विकास का अध्ययन करता है। इसमें यह खोज की जाती है कि किसी विशेष युग में कौन-से विचार लोकप्रिय थे, वे कैसे बने, किन परिस्थितियों में बदले और उन्होंने शैक्षणिक प्रक्रियाओं को किस प्रकार प्रभावित किया। टीम-टीचिंग, समस्या-समाधान पद्धति, मास्टरी लर्निंग जैसे आधुनिक विचारों की जड़ें इतिहास के विभिन्न चरणों में मिलती हैं, जिनका क्रमबद्ध अध्ययन इस शोध के अंतर्गत आता है।

संस्थाओं और संगठनों के इतिहास का शोध :- संस्थाओं और संगठनों के इतिहास का शोध शिक्षा संस्थानों के विकासक्रम, संगठनात्मक संरचना, कार्यप्रणाली और शैक्षिक योगदान का अध्ययन करता है। विश्वविद्यालयों, प्रमुख विद्यालयों, शैक्षणिक आंदोलनों या संगठनों के इतिहास से शिक्षा व्यवस्था के विकास की दिशा स्पष्ट होती है। उदाहरण के रूप में विश्वभारती विश्वविद्यालय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय या किसी प्रमुख शिक्षण संस्था के विकास को ऐतिहासिक रूप में अध्ययन किया जा सकता है। इस प्रकार का शोध यह समझने में सहायता करता है कि संस्थाएँ किस प्रकार सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुसार बदलती हैं।

ऐतिहासिक शोध के चरण :

ऐतिहासिक शोध की प्रक्रिया मूल रूप से अन्य शोध विधियों के समान ही चलती है, परंतु विषय की प्रकृति इसे विशिष्ट बनाती है। इतिहास से जुड़े तथ्य स्थिर, दोहराए न जा सकने वाले और अक्सर अपूर्ण होते हैं, इसलिए शोधकर्त्ता को अधिक सावधानी, गहन विश्लेषण तथा विशेष तकनीकों का उपयोग करना पड़ता है। सामान्यत: ऐतिहासिक शोध पाँच मुख्य चरणों में घटित होता है—समस्या का चयन, परिकल्पनाओं का संरूपण, आँकड़ों का संग्रहण, आँकड़ों की समालोचना और अंतत: परिणामों की व्याख्या एवं प्रतिवेदन।

समस्या का चयन :- सबसे पहले शोधकर्त्ता अपने अध्ययन की समस्या को चुनता है। वह व्यक्तियों, संस्थाओं, विधि-विधान, पाठ्यक्रम, शिक्षण-औजारों, सांस्कृतिक प्रभावों या किसी विशिष्ट विचारधारा के विकासक्रम को शोध-विषय बना सकता है। समस्या का चयन करते समय यह देखना आवश्यक होता है कि विषय ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हो, साथ ही उसके लिए पर्याप्त और विश्वसनीय स्रोत भी उपलब्ध हों। कई बार महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विषय केवल इसलिए छोड़ दिए जाते हैं क्योंकि उनके लिए आवश्यक आँकड़े उपलब्ध नहीं होते। इसलिए समस्या का चयन और इसका परिसीमन अत्यंत सावधानी से किया जाता है ताकि अध्ययन न तो अत्यन्त व्यापक रहे और न ही इतना सीमित कि उसके तथ्यात्मक आधार ही न मिलें।

प्रकल्पनाओं का निर्माण :- शोधकर्त्ता परिकल्पनाओं या स्पष्ट प्रकथनों का निर्माण करता है। कई बार यह तर्क दिया जाता है कि इतिहास में केवल तथ्य जुटाकर उन्हें क्रमबद्ध करना ही पर्याप्त है, परंतु बिना परिकल्पना के किया गया शोध अधूरा माना जाता है क्योंकि स्पष्ट दिशानिर्देशों के अभाव में शोधकर्त्ता घटनाओं के वास्तविक संबंधों और कारणों को समझ नहीं पाता। अत: ऐतिहासिक शोध में परिकल्पनाएँ

औपचारिक न होकर भी ऐसे कथनों के रूप में होती हैं जो शोधकर्त्ता को यह सोचने में मदद देती हैं कि किन घटनाओं के पीछे कौन-से कारण या परिस्थितियाँ कार्य कर रही थीं। यह परिकल्पनाएँ शोधकर्त्ता को तुच्छ, विरोधाभासी या त्रुटिपूर्ण निष्कर्षों से बचाती हैं और उसे यह समझने की दिशा देती हैं कि उसे किन प्रश्नों के उत्तर खोजने हैं।

आँकड़ों का संग्रहण :- इन परिकल्पनाओं को स्पष्ट करने के बाद शोधकर्ता आँकड़ों के संग्रहण का कार्य करता है। यह ऐतिहासिक शोध का सबसे समय-साध्य, श्रमसाध्य और धैर्य-आवश्यक चरण है। शोधकर्त्ता पुराने दस्तावेजों, पत्र-पत्रिकाओं, अभिलेखों, सरकारी प्रतिवेदनों, अवशेषों, शिलालेखों, आत्मकथाओं, समसामयिक विवरणों और अन्य स्रोतों में बिखरी हुई विशाल सामग्री को छाँटता है। उसमें से वह केवल उन्हीं तथ्यों को चुनता है जिनका संबंध प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उसकी समस्या से है।

ऐतिहासिक आँकड़े दो प्रकार के होते हैं—मुख्य स्रोत और गौण स्रोत। शोधकर्त्ता को इन दोनों के बीच अंतर करना, उनके वास्तविक मूल्य को पहचानना और उन्हें सही संदर्भ में व्यवस्थित करना सीखना पड़ता है। यह कुशलता ऐतिहासिक शोध की सफलता का आधार होती है।

1. प्रधान स्रोत :

प्रधान स्रोत वे मूल और प्रत्यक्ष साक्ष्य होते हैं जिन्हें ऐतिहासिक शोध का सबसे ठोस और विश्वसनीय आधार माना जाता है। इन्हें तथ्य के प्रथम प्रमाण कहा जाता है क्योंकि ये किसी घटना, व्यक्ति या संस्था से संबंधित उन मूल दस्तावेज़ों, अवशेषों या प्रत्यक्षदर्शी कथनों पर आधारित होते हैं जिनका निर्माण घटना के घटते समय या उसके तुरंत बाद हुआ हो। प्रधान स्रोत शोधकर्त्ता को इतिहास की वास्तविकता के सबसे नजदीक ले जाते हैं और यही कारण है कि इन्हें किसी भी ऐतिहासिक अध्ययन की रीढ़ माना जाता है।

व्यक्तिगत संलेख :- इन स्रोतों में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तिगत संलेख आते हैं। इनमें किसी व्यक्ति द्वारा अपने जीवनकाल में बनाए गए दस्तावेज़ शामिल होते हैं, जैसे उसकी डायरियाँ, आत्मकथाएँ, निजी पत्र, भाषण अथवा लेखन के मूल ड्राफ्ट, कानूनी दस्तावेज़, शपथ-पत्र, घोषणाएँ और विभिन्न प्रकार की निजी अभिलेखीय सामग्री। ऐसे संलेख व्यक्ति की सोच, भावनाओं, कार्यों और सामाजिक परिस्थितियों की प्रत्यक्ष झलक प्रदान करते हैं, इसलिए शोधकर्त्ता इनके माध्यम से अध्ययन के विषय से जुड़ी वास्तविकताएँ समझ सकता है।

सरकारी संलेख :- इसी प्रकार सरकारी संलेख भी प्रधान स्रोतों की अत्यंत महत्वपूर्ण श्रेणी हैं। इनमें संविधान, नियम, सरकारी राजपत्र, न्यायालय के निर्णय, आयोगों या समितियों के प्रतिवेदन, स्कूलों एवं विश्वविद्यालयों के अभिलेख, बजट, बैठकों के विवरण, उपस्थिति रजिस्टर, वार्षिक प्रतिवेदन, सर्वेक्षण और अन्य प्रशासनिक दस्तावेज़ शामिल होते हैं। ये संलेख न केवल शिक्षा व्यवस्था की संरचना और नीतियों के विकास का प्रमाण देते हैं बल्कि यह भी बताते हैं कि किसी समय में शिक्षा संस्थाएँ कैसे संचालित होती थीं और उनके सामने कौन-सी चुनौतियाँ थीं।

मौखिक परम्पराएँ :- प्रधान स्रोतों की एक महत्वपूर्ण श्रेणी मौखिक परंपराएँ और प्रत्यक्षदर्शी कथन हैं। लोककथाएँ, पारिवारिक स्मृतियाँ, धार्मिक अनुष्ठान, किसी घटना के प्रत्यक्ष साक्षी के बयान, शिक्षकों, विद्यार्थियों, प्रशासकों या किसी विशिष्ट संस्था से जुड़े व्यक्तियों के साक्षात्कार ऐसे स्रोत हैं जो

लिखित प्रमाणों के अभाव में भी इतिहास को जीवंत बनाते हैं। ये स्रोत मानवीय अनुभव, भावनाओं और सामाजिक वास्तविकताओं को समझने में बड़ी भूमिका निभाते हैं।

चित्रीय संलेख :- इसके अतिरिक्त चित्रीय संलेख—जैसे फ़ोटोग्राफ, पेंटिंग, चलचित्र, माइक्रोफिल्म, सिक्के और मूर्तियाँ—भी ऐतिहासिक शोध को बहुमूल्य जानकारी देते हैं। इन्होंने इतिहास की अनेक घटनाओं, व्यक्तित्वों और सांस्कृतिक जीवन को रूप और रंग के साथ सुरक्षित रखा है।

यांत्रिक संलेख :- यांत्रिक संलेख भी इसी प्रकार उपयोगी होते हैं, जिनमें टेप रिकॉर्डिंग, भाषण, साक्षात्कार, सभाओं के ध्वनि-चित्र आदि शामिल हैं। इन स्रोतों की विशिष्टता यह है कि ये घटनाओं को यथावत सुरक्षित रखते हैं और किसी व्याख्या या संपादन के बिना वास्तविक रूप प्रस्तुत करते हैं।

अवशेष या पुरातात्त्विक प्रतिदर्श :- अवशेष या पुरातात्त्विक प्रतिदर्श ऐतिहासिक शोध में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। भवनों के अवशेष, औजार, हथियार, वस्त्र, फर्नीचर, बर्तन, कलात्मक सामग्री, कंकाल और अन्य वस्तुएँ शोधकर्त्ता को प्राचीन जीवन की रीति-नीति, तकनीक, सामाजिक संरचना, आर्थिक गतिविधियों और सांस्कृतिक धारणाओं के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी देती हैं। इन वस्तुओं की विशेषता यह है कि शोधकर्त्ता स्वयं उनका परीक्षण कर सकता है, उन्हें देख सकता है, छू सकता है, माप सकता है और उनकी संरचना को समझ सकता है। यही कारण है कि अवशेष कई बार लिखित संलेखों से भी अधिक विश्वसनीय प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

प्रधान स्रोत इतिहास को पुनर्निर्मित करने का सबसे महत्वपूर्ण साधन हैं। इनके आधार पर ही शोधकर्त्ता यह समझ पाता है कि किसी युग में वास्तविकता क्या थी, समाज कैसे चलता था, शिक्षा किस प्रकार संगठित थी और कौन-सी शक्तियाँ उसके विकास को प्रभावित कर रही थीं।

2. गौण स्रोत :

गौण स्रोत वे होते हैं जिनमें किसी घटना, वस्तु या परिस्थिति का वर्णन ऐसे व्यक्तियों द्वारा किया जाता है जिन्होंने उसे प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा। ये विवरण या तो किसी प्रत्यक्षदर्शी से प्राप्त जानकारी पर आधारित होते हैं या किसी अन्य लिखित/मौखिक विवरण पर। इसी कारण इनमें त्रुटि या विकृति की संभावना अधिक रहती है।

जब प्रधान स्रोत उपलब्ध नहीं होते, तब शोधकर्त्ता को गौण स्रोतों का सहारा लेना पड़ता है। विशेषकर शिक्षा के इतिहास में प्रधान स्रोत अक्सर कम मिलते हैं क्योंकि प्राचीन काल में शिक्षा को महत्त्व नहीं दिया गया और संलेखन भी नहीं हुआ। ऐसे में गौण स्रोत रिक्त स्थानों को भरने में सहायक सिद्ध होते हैं।

यदि सावधानी से उपयोग किए जाएँ, तो गौण स्रोत शोधकर्त्ता को सिद्धांतों, पूर्व शोध, संभावित समाधानों और प्रमुख स्रोतों की दिशा दिखाते हैं। स्रोतों का वर्गीकरण हमेशा कठोर नहीं होता—कुछ सामग्री एक प्रसंग में गौण होती है, पर दूसरे में वही प्रधान बन जाती है।

ऐतिहासिक शोध में स्रोतों की ढूँढ़ एवं सत्यापन हेतु—कार्ड सूची, ग्रंथ सूची, जर्नल, सूचकांक और ऐतिहासिक समीक्षाएँ अत्यंत उपयोगी होती हैं। शोधकर्ता को अपने संदर्भ और टिप्पणियों में पूर्ण व सटीक ग्रंथसूची संकलित करने में विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

ऐतिहासिक शोध में आँकड़ों की समालोचना :

ऐतिहासिक शोध में आँकड़ों की समालोचना वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा शोधकर्त्ता उपलब्ध साक्ष्यों की विश्वसनीयता और सत्यता का परीक्षण करता है। पहले वह बाहरी रूप से स्रोत की प्रमाणिकता जाँचता है कि दस्तावेज़ या वस्तु सच में वही है या नहीं जिसका दावा किया गया है। इसके लिए हस्ताक्षर, भाषा, काग़ज़, स्याही, तिथि, लेखन शैली आदि की परख की जाती है। यह सुनिश्चित किया जाता है कि स्रोत नकली, परिवर्तित या भ्रमकारी न हो।

इसके बाद शोधकर्त्ता आंतरिक समालोचना करता है, जिसमें वह दस्तावेज़ की अंतर्वस्तु की सत्यता जाँचता है। इसमें लेखक की नीयत, ज्ञान, पक्षपात, उसका सामाजिक-राजनीतिक वातावरण, घटना को देखने की स्थिति, स्मरण-शक्ति और ईमानदारी की परीक्षा शामिल होती है। यह देखा जाता है कि लेखक ने जानकारी सही दी है या कुछ कारणों से उसे विकृत किया है—जैसे व्यक्तिगत स्वार्थ, भावनात्मक प्रभाव, अज्ञानता या किसी व्यक्ति/समूह को प्रसन्न करने की प्रवृत्ति।

तथ्यों की सत्यता का निर्धारण अन्य साक्ष्यों और स्रोतों से तुलना करके किया जाता है। जहाँ मतभेद होते हैं, वहाँ शोधकर्ता को यह तय करना होता है कि कौन सा स्रोत अधिक विश्वसनीय है। कभी-कभी उपलब्ध आँकड़ों में रिक्त स्थान रह जाते हैं, जिन्हें तार्किक अनुमान और सावधानीपूर्वक व्याख्या से भरा जाता है।

समालोचना के बाद शोधकर्ता आँकड़ों की व्याख्या करता है। व्याख्या सबसे कठिन चरण है क्योंकि ऐतिहासिक घटनाएँ सरल 'कारण-परिणाम' के ढाँचे में नहीं आतीं। कई परिस्थितियाँ और शक्तियाँ मिलकर परिणाम उत्पन्न करती हैं। शोधकर्ता को इन जटिलताओं को समझना होता है, घटनाओं में समानता-भिन्नता देखनी होती है और समय-रेखा में घटनाओं के संबंध को पहचानना होता है।

शोध प्रतिवेदन लेखन :

आँकड़ों की व्याख्या पूरी हो जाने के बाद शोधकर्ता अपने अध्ययन को एक सुव्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करने के लिए शोध प्रतिवेदन तैयार करता है। ऐतिहासिक शोध प्रतिवेदन में आमतौर पर समस्या का स्पष्ट विवरण, संबंधित साहित्य की समीक्षा, शोध के उद्देश्य और शोध प्रश्न, आँकड़ों के स्रोत तथा उनके संग्रहण की विधियाँ सम्मिलित होती हैं। इसके साथ ही आँकड़ों के वर्गीकरण की व्यवस्था, उनकी समालोचना, विश्लेषण, व्याख्या, निष्कर्ष और अंत में ग्रंथ सूची को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

ऐतिहासिक शोध प्रतिवेदन लिखना केवल तकनीकी कार्य नहीं है, बल्कि शोधकर्ता की कल्पनाशक्ति, विवेक, स्पष्टता और रचनात्मकता का भी द्योतक होता है। ऐतिहासिक आँकड़े अक्सर अपूर्ण और खंडित होते हैं, इसलिए शोधकर्ता को व्याख्या में कुछ स्वतंत्रता दी जाती है, परंतु यह स्वतंत्रता सत्य को विकृत करने या किसी तथ्य को छिपाने की अनुमति नहीं देती। जहाँ आँकड़ों में रिक्त स्थान अधिक हों, वहाँ शोधकर्ता को उन रिक्तियों को स्पष्ट रूप से स्वीकार करना चाहिए और आवश्यक हो तो उनके संभावित विकल्पों की ओर संकेत करना चाहिए।

प्रतिवेदन की प्रस्तुति तर्कसंगत, कालानुक्रमिक और विषयानुसार होनी चाहिए ताकि पाठक पूरे ऐतिहासिक क्रम और कारण-प्रभाव संबंधों को सहजता से समझ सके। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक,

सांस्कृतिक, धार्मिक और भौगोलिक शक्तियों के प्रभावों को एकीकृत ढंग से प्रस्तुत करना प्रतिवेदन को अधिक वैज्ञानिक और अर्थपूर्ण बनाता है।

लेखन शैली न तो उबाऊ और अनाकर्षक होनी चाहिए, न ही अत्यधिक अलंकृत। एक अच्छे ऐतिहासिक शोध प्रतिवेदन में स्पष्टता, परिशुद्धता, निरंतरता और सादगी के साथ-साथ शोधकर्ता की गहनता और विद्वत्ता का आभास होना आवश्यक है।

निष्कर्षतः ऐतिहासिक शोध अतीत की घटनाओं, परिस्थितियों और संस्थाओं का व्यवस्थित अध्ययन है, जिसका उद्देश्य वर्तमान और भविष्य की समझ को स्पष्ट करना है। इसमें समस्या चयन, परिकल्पना, आँकड़ों का संग्रह, समालोचना और व्याख्या मुख्य चरण हैं।

प्रधान स्रोत (जैसे दस्तावेज, अवशेष) और गौण स्रोत (अन्य माध्यम से ज्ञात) का उपयोग किया जाता है। शोधकर्ता को बाह्य और आंतरिक समालोचना करके स्रोतों की प्रमाणिकता और विश्वसनीयता जाँचना आवश्यक है। आँकड़ों की व्याख्या कारण-परिणाम और घटनाओं की प्रवृत्तियों को समझने में होती है। शोध प्रतिवेदन तर्कसंगत, कालानुक्रमिक और सुव्यवस्थित होना चाहिए, जिसमें समस्या, उद्देश्य, स्रोत, समालोचना, विश्लेषण, निष्कर्ष और ग्रंथ सूची शामिल हों।

संक्षेप में, ऐतिहासिक शोध अतीत के तथ्यों का वैज्ञानिक अध्ययन है जो शिक्षा और समाज को बेहतर समझने में योगदान देता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Good, C. V., Barr, R. B., & Skates, J. C., Methods of Research in Education, New Delhi: Prentice-Hall of India Pvt. Ltd., 1982*
2. *Hilway, J., Research Methods in Education, New York: Macmillan Publishing, 1970*
3. *Mouli, A. K., Historical Research in Education, Delhi: National Publishing House, 1995*
4. *Van Dalen, D. B., Understanding Educational Research, London: McGraw-Hill, 1979*
5. *Best, J. W., Research in Education, New Jersey: Prentice Hall, 1981*
6. *Goddard, H., Historical Methods and Practice, London: Routledge, 1966*
7. *Good, C. V., Barr, R. B., & Skates, J. C., Historical Research in Education: Principles and Methods, New Delhi: Prentice-Hall of India Pvt. Ltd., 1982*
8. *Mouli, A. K., Sources and Techniques in Historical Research, Delhi: National Publishing House, 1995*
9. *Goddard, H., Evaluation of Historical Sources, London: Routledge, 1968*
10. *Van Dalen, D. B., Techniques of Historical Analysis, New York: McGraw-Hill, 1980*